Sardi Ke Baare Mein Dilchasp Ma'lumaT (Hindi)

सर्दी के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

20 सफ़हात

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या

(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''सर्दी के बारे में दिलचस्प मा'लूमात''**

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)
मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

सर्दी के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

दुआए अ़त्तार : या अल्लाह पाक ! जो कोई 19 सफ़हात का रिसाला **''सर्दी के बारे में दिलचस्प मा'लूमात''** पढ़ या सुन ले उस को जहन्नम के हर अ़ज़ाब ख़ुसूसन ठन्डक के सख़्त अ़ज़ाब से बचा कर जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िले से नवाज़ दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान सख़ावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه अपनी किताब ''अल क़ौलुल बदीअ़'' जो दुरूदे पाक के बारे में लिखी गई है उस में फ़रमाते हैं : एक नेक शख़्स मिस्र में रहा करता था जिसे अबू सईद अल ख़य्यात़ के नाम से पुकारा जाता था वोह लोगों से दूर अकेला रहा करता और लोगों से मिलता नहीं था। फिर अचानक उस ने ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने रशीक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की मह़फ़िल में पाबन्दी से शिर्कत करना शुरूअ़ कर दी, लोग बड़े ह़ैरान (Astonished) हुए और उस से इस की वज्ह पूछी तो उस ने बताया : **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मेरे ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और मुझे फ़रमाया : इन की मह़फ़िल में ह़ाज़िर हुवा करो क्यूं कि येह अपनी मह़फ़िल में मुझ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ता है। (القول البدیع، ص60)

फिर जब ह़ज़रते इब्ने रशीक़ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه का इन्तिक़ाल हुवा तो इन्हें ख़्वाब में अच्छी ह़ालत में देख कर अ़र्ज़ किया गया : येह इन्आ़मात मिलने

का सबब क्या बना ? इर्शाद फ़रमाया : नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ना। (الصلات والبشر، ص108)

ज़ाते वाला पे बार बार दुरूद बार बार और बे शुमार दुरूद
बैठते उठते जागते सोते हो इलाही मेरा शिआ़र दुरूद

दुआ़ए मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से सर्दी दूर हो गई

जन्नती सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक सख़्त सर्द रात में फ़ज्र की अज़ान कही लेकिन मस्जिद में कोई न आया कुछ देर बा'द मैं ने फिर अज़ान दी मगर अब की बार भी कोई न आया। जब **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह मुआ़मला देखा तो इर्शाद फ़रमाया : **''लोगों को क्या हुवा ?''** मैं ने अ़र्ज़ की : ''सख़्त सर्दी ने लोगों को मस्जिद में आने से रोक रखा है।'' आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई : **''ऐ अल्लाह पाक ! लोगों से सर्दी को दूर फ़रमा।''** ह़ज़रते सय्यिदुना बिलाल رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : (सर्दी ऐसी दूर हुई कि) मैं ने लोगों को सुब्ह़ के वक़्त गर्मी की वज्ह से पंखा झलते हुए देखा। (كتاب الضعفاء للعقيلي، 129/1)

इजाबत का सेहरा इनायत का जोड़ा दुल्हन बन के निकली दुआ़ए मुह़म्मद
इजाबत ने झुक कर गले से लगाया बढ़ी नाज़ से जब दुआ़ए मुह़म्मद

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : इजाबत : क़बूलिय्यत, **जोड़ा :** लिबास, **नाज़ :** फ़ख़्र

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

चार मौसिमों की ने'मत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह पाक ने चार मौसिम (Weather) पैदा फ़रमाए हैं, सर्दी, गर्मी, बहार, ख़ज़ां। हर मौसिम की अपनी अपनी ख़ुसूसिय्यात हैं और हर एक का अपना मज़ा और ख़ास

फल व सब्ज़ियां हैं। गर्मी के मौसिम में बा'ज़ फ़स्लें (Crops) पकती हैं, जो इन्सान की अहम तरीन ज़रूरिय्यात में से हैं और पसीने के ज़रीए से कई बीमारियां जिस्म से ख़ारिज होती हैं जब कि सर्दियों में कई त़रह़ के ख़ुश्क मेवाजात (Dry Fruits) की पैदावार होती है जो कि जिस्मे इन्सानी के लिये बहुत मुफ़ीद हैं। मौसिमे बहार में न सिर्फ़ हर त़रफ़ हरियाली ही हरियाली होती है बल्कि आंखों को ताज़गी बख़्शने वाले रंग बरंगे फूल खिल उठते हैं, दुन्या में ऐसे ममालिक जहां एक साल में येह चारों मौसिम आते हों कम हैं, कहीं सारा साल या साल के अक्सर दिनों में सर्दी रहती है तो कहीं गर्मी, **अल्लाह पाक की रह़मत पे क़ुरबान !** कि हमारे वत़ने अ़ज़ीज़ में येह चारों मौसिम साल में आते हैं।

अल्लाह पाक की पैदा की हुई हर चीज़, हर मौसिम अच्छा है और मौसिम की तब्दीली में **अल्लाह** पाक की बे शुमार ह़िक्मतें हैं। हम कमज़ोर व नातुवां लोग बहुत जल्द ही घबरा जाते हैं, गर्मी की शिद्दत हो तो कहते हैं सर्दी बहुत अच्छी है काश ! सर्दी जल्द आ जाए, जब सर्दी ज़ियादा हो जाए तो कहते हैं गर्मी आ जाए तो अच्छा है। गर्मी की शिद्दत बढ़ जाए या सर्दी ज़ियादा हो जाए हर ह़ाल में सब्र से काम लेना चाहिये, सर्दी और गर्मी को बुरा कहना **बहुत बुरी बात** है, किसी मौसिम का गिला शिक्वा (Complaint) करने वाला एक त़रह़ से मौसिम पैदा करने वाले ख़ुदाए पाक की शिकायत कर रहा है गोया कह रहा है कि देखो ! **अल्लाह** पाक ने कितनी सर्दी या गर्मी बढ़ा दी है !

ज़माने को बुरा कहना कैसा ?

बुख़ारी शरीफ़ ह़दीस नम्बर 6181, **अल्लाह** पाक इर्शाद फ़रमाता है : आदमी ज़माने को गालियां (Swearing) देता है ह़ालां कि ज़माना (बनाने

वाला) तो मैं हूं और इस के दिन, रात मेरे ही क़ब्ज़ए क़ुदरत में हैं।

(بخاری،150/4،حدیث:6181)

सह़ीह़ मुस्लिम ह़दीस नम्बर 2246, फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : ज़माने को बुरा न कहो क्यूं कि **अल्लाह पाक ही ने ज़माने को पैदा फ़रमाया है।** (مسلم، ص951،حدیث:5862)

शारेह़े मुस्लिम, ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम शरफ़ुद्दीन नववी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि **अल्लाह** पाक पर ज़माने का इ़त्लाक़ मजाज़ी त़ौर पर किया गया है इस का सबब येह है कि अ़रबों की आ़दत थी कि मौत, बुढ़ापे या माल के ज़ाएअ़ हो जाने जैसे ह़ादिसात और मसाइब पर ज़माने को बुरा मानते हुए कहते थे **''हाए ज़माने की बरबादी''** तो **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ज़माने को बुरा न कहा करो क्यूं कि ज़माना **अल्लाह** पाक ख़ुद है या'नी इन ह़वादिसात व मसाइब को पैदा करने वाला **अल्लाह** पाक ही है और वोही इन को उतारने वाला है जब तुम मसाइब को बुरा कहोगे तो दर ह़क़ीक़त येह **अल्लाह** पाक को बुरा कहना होगा क्यूं कि इन को पैदा करने वाला और इन का फ़ाइल (या'नी ह़ालात बदलने वाला) **अल्लाह** पाक ही है। (شرح صحیح مسلم،3/15)

सब का पैदा करने वाला, मेरा मौला मेरा मौला
सब से अफ़्ज़ल सब से आ'ला, मेरा मौला मेरा मौला
जग का ख़ालिक़ सब का मालिक, वोह ही बाक़ी, बाक़ी हालिक
सच्चा मालिक सच्चा आक़ा, मेरा मौला मेरा मौला

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : जग : दुन्या। **हालिक :** ख़त्म होने वाला।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सर्दी और गर्मी कैसे होती है ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! क्या आप जानते हैं कि सर्दी और गर्मी का अस्ल सबब क्या है ? चुनान्चे बुख़ारी शरीफ़ ह़दीस नम्बर 537 और 538 में है : दोज़ख़ ने अपने रब के पास शिकायत की, कि मेरे बा'ज़ अज्ज़ा (Parts) ने बा'ज़ को खा लिया तो इसे दो मरतबा सांस की इजाज़त दी गई, एक सर्दी में एक गर्मी में। येह वोही तेज़ गर्मी और ठन्डक है जिसे तुम महसूस करते हो और बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में यूं है कि **''जो तेज़ गर्मी तुम पाते हो येह दोज़ख़ की गर्म सांस से है और जो तेज़ ठन्डक तुम पाते हो येह उस की ठन्डी सांस से है।''**

(بخاری، 199/1، حدیث: 537۔538)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दोज़ख़ जब ऊपर को सांस लेता है तो दुन्या में उ़मूमन सर्दी का ज़ोर होता है और जब नीचे को सांस छोड़ता है तो उ़मूमन गर्मी की शिद्दत, येह ह़दीस बिल्कुल ज़ाहिरी मा'ना पर है किसी तावील या तौजीह की ज़रूरत नहीं, हर चीज़ में क़ुदरत ने ज़िन्दगी और शुऊ़र बख़्शे हैं। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/380)

क़ुदरते ख़ुदावन्दी के करिश्मे

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अबू ह़ामिद मुह़म्मद बिन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ाली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बीच आस्मान से सूरज के इधर उधर माइल होने को देखो ह़त्ता कि इस के सबब सर्दी, गर्मी, ख़ज़ां और बहार के मौसिम तब्दील होते हैं। जब सूरज वस्ते आस्मान (या'नी आस्मान के दरमियान) से नीचे को झुकता है तो हवा ठन्डी और मौसिम सर्द हो जाता है और जब आस्मान के दरमियान में ठहरता है तो सख़्त गर्मी

हो जाती है और जब इन दोनों के दरमियान होता है तो मौसिम मो'तदिल (या'नी दरमियाना) हो जाता है। (احیاء العلوم، 5/466) سُبْحٰنَ الله ! **अल्लाह** पाक की शाने क़ुदरत के कैसे हैरत अंगेज़ रंग हैं। سُبْحٰنَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ या'नी **अल्लाह** पाक अ़ज़मत वाला है और उसी के लिये तमाम ता'रीफ़ें हैं।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के भाईजान शहन्शाहे सुख़न, उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रत मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कितना प्यारा शे'र कहा है :

हर शै से हैं इयां मेरे सानेअ़ की सन्अ़तें   आ़लम सब आइनों में है आईना साज़ का

अफ़्लाको अर्ज़ सब तेरे फ़रमां पज़ीर हैं   ह़ाकिम है तू जहां के नशीबो फ़राज़ का

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : इयां : ज़ाहिर। **सानेअ़ :** बनाने वाला। **सन्अ़त :** चीज़ें। **आईना साज़ :** बनाने वाला। **अफ़्लाक :** आस्मान। **अर्ज़ :** ज़मीन। **फ़रमां पज़ीर :** फ़रमां बरदार। **नशीबो फ़राज़ :** उतार चढ़ाव।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب   صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नादान इन्सान

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सोचिये तो सही ! येह इन्सान भी कैसा नादान है, जो गाड़ी तक पहुंचने से पहले रीमोट से गाड़ी खोल लेता है, सर्दी आने से क़ब्ल गर्म कपड़ों का इन्तिज़ाम कर लेता है, रात घर आने से पहले नाश्ते का सामान ले आता है, बच्चे की पैदाइश से पहले कपड़े तय्यार कर लेता है, रमज़ानुल मुबारक में अ़स्र से क़ब्ल ही इफ़्त़ारी की तय्यारी शुरूअ़ कर देता है, बारिश में निकलने से पहले छत्री ले लेता है, लम्बे सफ़र पर रवाना होते वक़्त गाड़ी, हवा, पानी, पेट्रोल चेक कर लेता

है, अंधेरे में निकलने से पहले टॉर्च थाम लेता है लेकिन मौत जो कि यक़ीनी तौ़र पर आने वाली है इस के लिये बिल्कुल भी तय्यारी नहीं करता। सर्दी, गर्मी का मौसिम तो अपने वक़्त पर आता जाता है मगर हम अपनी क़ब्रो आख़िरत की तय्यारी क्यूं नहीं करते !!! अ़ज़ीम ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते अबू अ़ब्दुल्लाह सुनाबिह़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाया करते थे : "हम गर्मी सर्दी के मौसिम देखते देखते दुन्या से चले जाते हैं (या'नी आख़िरत के लिये कुछ अ़मल नहीं करते)।" (**अल्लाह** वालों की बातें, 5/166 ब तग़य्युर)

किस बला की मै से हैं सरशार हम   दिन ढला होते नहीं हुशियार हम

अल्फ़ाज़ व मआ़नी : बला : मुसीबत। **मै :** नशा, मस्ती। **सरशार :** मदहोश। **हुशियार :** बेदार।

शर्हे कलामे रज़ा : या अल्लाह पाक ! शैत़ान ने हमें (गुनाहों और फ़ुज़ूलिय्यात) के नशे में किस क़दर बद मस्त कर दिया है कि ज़िन्दगी गुज़रती जा रही है और हम होश में आने का नाम नहीं ले रहे।

कुछ नेकियां कमाले जल्द आख़िरत बना ले   भाई नहीं भरोसा है कोई ज़िन्दगी का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

हर मुश्किल आसान

ह़ज़रते सुलैमान दारानी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : नफ़्स की मुख़ालफ़त अफ़्ज़ल तरीन अ़मल है। (تفسیر کبیر، 1/431) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के फ़रमान का ख़ुलासा है : जो ईमान की ह़लावत (या'नी मिठास) पा लेता है वोह बड़ी बड़ी मशक़्क़तें (या'नी मुश्किल काम) ख़ुशी से बरदाश्त कर लेता है जैसे सर्दियों की नमाज़, करबला का मैदान इस की हमेशा रहने वाली मिसाल है। (मिरआतुल मनाजीह़, 1/30)

मोमिनों का मौसिमे बहार !

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सर्दी बन्दए मोमिन के लिये बहार का मौसिम है क्यूं कि जब सर्दी का मौसिम आता है तो बन्दए मोमिन भूक और प्यास की मशक़्क़त उठाए बिग़ैर ही दिन में रोज़ा रख सकता है कि दिन छोटा और सर्द होता है लिहाज़ा रोज़े की तक्लीफ़ इतनी महसूस नहीं होती। चुनान्चे **सरकारे** दो जहां صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वाला शान है : सर्दी के रोज़े ठन्डी ग़नीमत हैं। (ترمذی،2/210،حدیث:797) **एक और मक़ाम पर रसूले पाक** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सर्दी का मौसिम मोमिन का "**मौसिमे बहार**" है कि इस में दिन छोटे होते हैं तो मोमिन इन में रोज़ा रखते हैं और इस की रातें लम्बी होती हैं तो वोह इन में क़ियाम करते (या'नी नवाफ़िल वग़ैरा पढ़ते) हैं। (شعب الایمان،3/416،حدیث:3940)

सर्दी को ख़ुश आमदीद

जन्नती सह़ाबी, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ عَنْه मौसिमे सरमा की आमद पर फ़रमाते : सर्दी को ख़ुश आमदीद, इस में **अल्लाह** पाक की रह़मतें नाज़िल होती हैं कि शब बेदारी करने वाले के लिये इस की रातें लम्बी और रोज़ादार के लिये दिन छोटा होता है।

(فردوس الاخبار،2/349،حدیث:6808)

हर क़दम पर नेकियां

"**बनू सलिमा**" अन्सार का एक क़बीला था उन के घर मस्जिदुन्नबवियिश्शरीफ़ से दूर थे येह रात के अंधेरे में, बारिश के वक़्त और सख़्त सर्दी में भी बा जमाअ़त नमाज़ की कोशिश फ़रमाते थे। **अपनी**

उम्मत से प्यार करने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इन को ख़ुश ख़बरी इर्शाद फ़रमाई कि **''तुम्हारे हर क़दम पर नेकियां लिखी जाती हैं।''** (مرقاۃ المفاتیح، 2/404، تحت الحدیث: 770۔ مسلم، حدیث: 1519، ص262)

अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़

जन्नती सह़ाबी, मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी ज़ुन्नूरैन رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने एक सर्द रात में नमाज़ के लिये जाने का इरादा फ़रमाया तो वुज़ू के लिये पानी मंगवाया फिर आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अपना चेहरा और दोनों हाथ धोए। ग़ुलाम ने अ़र्ज़ किया : **अल्लाह** पाक आप को किफ़ायत करे रात तो बहुत ठन्डी है। आप رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने फ़रमाया : मैं ने नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुए सुना कि **''जो बन्दा कामिल (या'नी पूरा) वुज़ू करेगा उस के अगले पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।''** (الترغیب والرھیب، 1/93، حدیث: 11)

दो फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

(1) जिस ने सख़्त सर्दी में कामिल वुज़ू किया उस के लिये सवाब के दो ह़िस्से हैं। (مجمع الزوائد، 1/542، حدیث: 1217) (2) मशक़्क़त (Struggle) के वक़्त वुज़ू करने वाले को क़ियामत के दिन अ़र्श का साया नसीब होगा। (اتحاف، 10/385، حدیث: 10100)

दे शौक़े तिलावत दे ज़ौक़े इबादत रहूं बा वुज़ू मैं सदा या इलाही
मैं पांचों नमाज़ें पढ़ूं बा जमाअ़त हो तौफ़ीक़ ऐसी अ़त़ा या इलाही
मैं पढ़ता रहूं सुन्नतें, वक़्त ही पर हों सारे नवाफ़िल अदा या इलाही

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

नेकियों भरी सोच

ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : सर्दी बन्दए मोमिन का कितना अच्छा ज़माना है ! रात लम्बी होती है, बन्दा रात में नमाज़ के लिये क़ियाम करता है और दिन छोटा होता है तो बन्दा रोज़ा रख लेता है । (لطائف المعارف، ص372،373)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बैद बिन उ़मैर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जब सर्दी आती है तो अहले क़ुरआन से कहा जाता है तुम्हारी नमाज़ के लिये रात त़वील (या'नी लम्बी) हो गई और रोज़ों के लिये दिन छोटा हो गया ।

(احادیث الشتاء للسیوطی، ص97)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ज़िन्दगी बहुत मुख़्तसर है हम हर वक़्त मौत के क़रीब होते जा रहे हैं, ज़िन्दगी की जो चन्द सांसें बाक़ी हैं इन को ग़नीमत जानते हुए **अल्लाह** पाक और उस के रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद में गुज़ारिये, सर्दी की मशक़्क़त पर सब्र कर के सवाब कमाइये कि اَفْضَلُ الْاَعْمَالِ اَحْمَزُهَا (या'नी अफ़्ज़ल तरीन अ़मल वोह है जिस में मशक़्क़त ज़ियादा हो ।) ख़ूब इ़बादात कीजिये, सुन्नतों पर अ़मल कीजिये, नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र कीजिये और नेक आ'माल का रिसाला पुर कर के आहिस्ता आहिस्ता इन पर अपना अ़मल बढ़ाते जाइये, ठन्ड लग रही हो और जिस्म सर्दी से कपकपा रहा हो, वुज़ू कीजिये और नमाज़े बा जमाअ़त का ख़ास एहतिमाम फ़रमाइये कि ह़ज़रते सय्यिदुना इब्राहीम बिन अदहम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : जो अ़मल दुन्या में जितना दुश्वार गुज़ार (या'नी मुश्किल) होगा मीज़ाने अ़मल पर वोह उतना ही ज़ियादा वज़्न दार होगा । (تذکرۃ الاولیاء، ص95)

रोज़ा नहीं छोड़ा

रमज़ानुल मुबारक में एक बार सदरुश्शरीअ़ह मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को सख़्त सर्दी का बुख़ार चढ़ गया इस में ख़ूब ठन्ड लगती और शदीद बुख़ार चढ़ता नीज़ प्यास की शिद्दत भी ना क़ाबिले बरदाश्त होती, ज़ोह्र के बा'द ख़ूब सर्दी चढ़ती फिर **बुख़ार** आ जाता मगर क़ुरबान जाइये ! इस ह़ाल में भी कोई **रोज़ा** नहीं छोड़ा । (तज़्किरए सदरुश्शरीअ़ह, स. 23)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! ह़दीसे पाक में है : जिस ने शुरूअ़ दिन में क़ुरआन ख़त्म किया, शाम तक फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार करते हैं और जिस ने इब्तिदाए शब (या'नी रात के शुरूअ़) में ख़त्म किया, सुब्ह़ तक इस्तिग़्फ़ार करते हैं । (غنیۃ المتملی، ص496)

बहारे शरीअ़त जिल्द 1 सफ़ह़ा 551 पर है : गर्मियों में चूंकि दिन बड़ा होता है तो सुब्ह़ के ख़त्म करने में इस्तिग़्फ़ारे मलाएका (या'नी फ़िरिश्तों की दुआ़ए मग़्फ़िरत) ज़ियादा होगी और जाड़ों (या'नी सर्दियों) की रातें बड़ी होती हैं तो शुरूअ़ रात में ख़त्म करने से इस्तिग़्फ़ार ज़ियादा होगी ।

अगर अल्लाह पाक चाहे

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सुलैमान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने सफ़रे ह़ज में एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को देखा कि सख़्त सर्दी में पुराने कपड़े पहने पसीने में शराबोर (Drenched with sweat) हैं । आप ने उन से ह़ाल पूछा, तो उन्हों ने फ़रमाया : गर्मी और सर्दी तो **अल्लाह** पाक की दो मख़्लूक़ात (Creatures) हैं, **अल्लाह** पाक हुक्म फ़रमाए कि सर्दी गर्मी

मुझ पर छा जाएं तो मुझे सर्दी व गर्मी लग के रहें और अगर वोह रब्बे करीम हुक्म फ़रमाए तो सर्दी व गर्मी मेरे क़रीब भी न आएं। उन बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने मज़ीद फ़रमाया : मैं 30 साल से इस जंगल में हूं, **अल्लाह** पाक मुझे सर्दी में अपनी महब्बत की गर्माइश अ़ता फ़रमाता है और गर्मी में अपनी महब्बत की ठन्डक बख़्शता है।

(لطائف المعارف، ص376, इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल, स. 110)

महब्बत ग़ैर की दिल से निकालो या रसूलल्लाह मुझे अपना ही दीवाना बना दो या रसूलल्लाह

अफ़ज़ल अ़मल

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मन्क़ूल है : सर्दी के मौसिम में ग़रीबों पर सर्दी दूर करने वाली चीज़ें ईसार करना बहुत फ़ज़ीलत वाला अ़मल है। (لطائف المعارف، ص378) **अल्लाह** पाक क़ुरआने करीम में पारह 6 **सूरतुल माइदह,** आयत नम्बर 32 में इर्शाद फ़रमाता है : وَمَنْ اَحْیَاهَا فَكَاَنَّمَاۤ اَحْیَا النَّاسَ جَمِیْعًا ؕ **तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और जिस ने एक जान को जिला लिया (या'नी क़त्ल से बचा कर ज़िन्दा रखा) उस ने गोया सब लोगों को जिला लिया।

इमाम फ़ख़्रुद्दीन राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''وَمَنْ اَحْیَاهَا'' से मुराद येह है कि जिस ने किसी इन्सान को हलाक कर देने वाली अश्या जैसे जलने, डूबने, बहुत ज़ियादा भूक और इन्तिहाई गर्मी या सर्दी वग़ैरा से नजात दिला कर ज़िन्दा किया। (تفسیر کبیر، المائدۃ، تحت الآیۃ:32، 344/4)

हमेशा हाथ भलाई के वासिते उठ्ठें बचाना ज़ुल्मो सितम से मुझे सदा या रब
रहें भलाई की राहों में गामज़न हर दम करें न रुख़ मेरे पाउं गुनाह का या रब

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

सख़्त सर्दी में क़मीस का सदक़ा

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते सुलैमान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुल्के शाम में रहने वालों में से एक शख़्स ने आ कर मुझ से कहा कि मुझे ह़ज़रते सफ़्वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के बारे में बताइये, मैं ने उन्हें जन्नत में दाख़िल होते देखा है । पूछा गया : किस अ़मल के सबब ? उस ने बताया : किसी को एक क़मीस (Shirt) पहनाने के सबब । ह़ज़रते सय्यिदुना सफ़्वान बिन सुलैम ज़ोहरी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से किसी ने उस क़मीस का तज़्किरा किया तो आप رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : "एक मरतबा मैं सख़्त सर्दी की रात में मस्जिद से निकला तो एक बरह्ना (या'नी नंगे) शख़्स पर नज़र पड़ी, मैं ने अपनी क़मीस उतार कर उसे पहना दी ।"

(حلیۃ الاولیاء،3/188،رقم:3655, इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल, स. 110)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

नेक वज़ीर

मख़्लूक़े ख़ुदा से अच्छा सुलूक करने का वाक़िआ़ मुलाह़ज़ा कीजिये : एक नेक वज़ीर को बताया गया कि एक औ़रत के चार यतीम बच्चे नंगे और भूके हैं । वज़ीर ने एक आदमी को हुक्म दिया कि फ़ौरन जाओ और उन की ज़रूरत के कपड़े और खाना वग़ैरा उन्हें पहुंचाओ । फिर वज़ीर ने अपना (गर्म) लिबास उतार दिया और क़सम खाई, ख़ुदा की क़सम ! मैं तब तक लिबास न पहनूंगा और न ही कोई गर्माइश (या'नी Heat) लूंगा जब तक येह आदमी मुझे वापस आ कर बता न दे कि उन यतीमों को लिबास पहना दिये हैं और उन का पेट भर दिया है । चुनान्चे उस आदमी ने जब वापस आ कर बताया कि यतीमों ने कपड़े पहन लिये

हैं और खाने से पेट भर गए हैं, तब नेक वज़ीर ने अपने कपड़े दोबारा पहने, उस वक़्त नेक वज़ीर सर्दी से कांप रहा था।

(لطائف المعارف،ص378, इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल, स. 111)

मुख़्तसर सी ज़िन्दगी है भाइयो ! नेकियां कीजे, न ग़फ़लत कीजिये

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह करीम के नेक बन्दे सवाब कमाने का कोई मौक़अ़ हाथ से जाने नहीं देते थे। जैसा कि अभी वाक़िए़ से आप ने सुना। **अल्लाह** पाक की ने'मतों में से एक अ़ज़ीम ने'मत "**लिबास**" भी है, लिबास में बहुत सी ख़ूबियां हैं, सित्र पोशी (या'नी शर्म की चीज़ों को छुपाना), ज़ीनत, सर्दी गर्मी से बचाव, नमाज़ की अदाएगी लिहाज़ा येह अ़ज़ीमुश्शान ने'मतों से है। (मिरआतुल मनाजीह, जि. 6, स. 123) जिस त़रह़ हम अपने आप को सख़्त सर्दी या गर्मी में ठन्ड या गर्मी से बचाने की कोशिश करते हैं, **ज़ह़े नसीब !** अपने इर्द गिर्द रहने वाले ग़रीब पड़ोसियों, रिश्तेदारों का सख़्त सर्दी में ख़याल रखा जाए, उन्हें गर्म लिबास और लिह़ाफ़ वग़ैरा पेश किये जाएं बल्कि बे ज़बान जानवरों पर भी रह़्म करना चाहिये क्यूं कि येह बेचारे अपनी तक्लीफ़ व मुसीबत किस को जा कर बताएंगे ? क्या पता हमारा इन के साथ किया जाने वाला अच्छा सुलूक **अल्लाह** पाक की बारगाह में मक़्बूल हो जाए और वोही मग़्फ़िरत का सबब बन जाए जैसा कि **ह़ज़रते** (सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र) शिबली (बग़्दादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه) को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देखा गया तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** पाक ने मुझे अपनी बारगाह में खड़ा कर के इर्शाद फ़रमाया : तुम्हें मा'लूम है मैं ने तुम्हें क्यूं बख़्शा ? मैं अपने वोह नेक आ'माल याद करने लगा जो बख़्शिश का ज़रीआ़ बन सकते थे, तो

अल्लाह पाक ने इर्शाद फ़रमाया : मैं ने इन आ'माल में से किसी अ़मल के सबब तेरी बख़्शिश नहीं फ़रमाई। मैं ने अ़र्ज़ की : ऐ मेरे प्यारे प्यारे **अल्लाह** ! फिर तू ने किस सबब से मेरी मग़्फ़िरत फ़रमाई ? इर्शाद फ़रमाया : एक मरतबा तुम बग़्दाद की गली से गुज़र रहे थे कि तुम ने एक बिल्ली को देखा जिसे सर्दी ने कमज़ोर कर दिया था तो इस पर तर्स खाते हुए तुम ने उसे अपने जुब्बे (या'नी कपड़ों) में छुपा लिया ताकि वोह सर्दी से बच जाए लिहाज़ा बिल्ली पर रह़्म की वज्ह से मैं ने आज तुम पर रह़्म फ़रमाया है। (حیاۃ الحیوان 522/2)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

काश ! अ़त्तार से फ़रमाएं क़ियामत में हुज़ूर ले मुबारक कि तुझे बख़्श दिया जाता है

ईमान अफ़रोज़ ह़सरत

अल्लाह पाक के वली ह़ज़रते आ़मिर बिन अ़ब्दुल क़ैस رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का इन्तिक़ाल शरीफ़ इन कलिमात को रोते रोते कहते हुए हुवा : मैं मौत के डर या दुन्या की मह़ब्बत में नहीं रो रहा हूं, बल्कि मैं इस ख़याल से रो रहा हूं कि मैं अब फ़ौत हो रहा हूं अब गर्मियों के रोज़ों में दो पहर की प्यास और जाड़ों (या'नी सर्दियों) की लम्बी रातों में क़ियामुल्लैल (रात की इबादात) की लज़्ज़त मुझे कब और कैसे नसीब हुवा करेगी ?

(आईनए इ़ब्रत, स. 53)

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! सर्दियों में ख़ुसूसन फ़ज्र व इ़शा की नमाज़ नफ़्से अम्मारा पर मुश्किल होती है और अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जिस में ज़ह़मत (या'नी मशक़्क़त) ज़ियादा हो। ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल

अ़ज़ीज़ رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अफ़्ज़ल अ़मल वोह है जिस पर नफ़्स को मजबूर किया जाए। ह़ज़रते सफ़्वान बिन सुलैम رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه गर्मियों में घर के अन्दर और सर्दियों में छत पर नमाज़ पढ़ते ताकि नींद न आए। और आप का सज्दे की ह़ालत में इन्तिक़ाल हुवा। (ذم الھوی، ص56)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صَلَّی اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बना दे मुझे नेक नेकों का सदक़ा गुनाहों से हर दम बचा या इलाही
इ़बादत में गुज़रे मेरी ज़िन्दगानी करम हो करम या ख़ुदा या इलाही
मुसल्मां है अ़त्तार तेरी अ़त़ा से हो ईमान पर ख़ातिमा या इलाही

सर्दी से ह़िफ़ाज़त के चन्द मदनी फूल

(1) मोटी जुराबें, मोज़े और बन्द जूतों का इस्ति'माल कीजिये।

(2) (हो सके तो देसी) उबला हुवा अन्डा इस्ति'माल कीजिये। (ज़रूरतन अपने डॉक्टर के मश्वरे के मुत़ाबिक़)

(3) ह़त्तल इम्कान कुछ देर धूप में बैठिये।

(4) नज़्ला, ज़ुकाम हो जाने की सूरत में **भाप** लीजिये।

(5) एड़ियों (Heels) और होंटों (Lips) को फटने से बचाने के लिये लिक्विड ग्लीसिरीन (Liquid Glycerin) और वेस्लीन इस्ति'माल कीजिये। (माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रबीउ़ल आख़िर 1438 हि., स. 79 ब तग़य्युर)

हीटर के इस्ति'माल में एह़तियात़

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : अगर हीटर चलाएं तो मेरा **मश्वरा** येह है कि

जब कमरा गर्म हो जाए तो सोने से पहले हीटर ज़रूर बन्द कर दें क्यूं कि जब कमरा गर्म हो गया तो अब इस के चलते रहने की ज़रूरत नहीं है और इस को बन्द न करने में ख़त़रा भी है। बा'ज़ लोग हीटर चला कर कमरा बन्द कर के सो जाते हैं येह एक रिस्की काम है क्यूं कि बा'ज़ अवक़ात गेस लीक हो रही होती है और मा'लूम न होने की वज्ह से ह़ादिसा हो जाता है। अख़्बारात में भी ऐसी कई ख़बरें छपती हैं कि हीटर से गेस लीक होने की वज्ह से धमाका हुवा और इतने लोग इन्तिक़ाल कर गए । येह एह़तियात़ सिर्फ़ गेस वाले हीटर के लिये ही नहीं बल्कि अगर बिजली वाला हीटर हो तो उस में भी आग लगने का ख़त़रा रहता है लिहाज़ा उसे भी बन्द कर के सोया जाए। (सर्दी से बचने के त़रीक़े, स. 3)

अपने बच्चों को येह खिलाइये

सिह़्ह़त के लिये ख़त़रा बनने वाली खटमिठी गोलियों और टॉफ़ियों वग़ैरा की जगह अपने बच्चों को उन की उ़म्र वग़ैरा के लिहाज़ से मुनासिब मिक़्दार में या डॉक्टर के मश्वरे के मुत़ाबिक़ फल और ख़ुश्क मेवे (ड्रायफ़्रूट) खिलाइये और आप ख़ुद भी **अल्लाह** पाक की दी हुई इन ने'मतों से फ़ाएदा उठाइये। चन्द ख़ुश्क मेवों के फ़वाइद पेशे ख़िदमत हैं :

बादाम (Almond)

(1) तमाम **बादाम** कोलेस्ट्रोल से पाक होते हैं (2) कड़वे **बादाम** या ईरानी बादाम ''केन्सर'' की रोकथाम की ख़ुसूसिय्यत रखते हैं (3) **बादाम** में ''केल्शियम'' होता है जो कि हड्डियों के लिये ज़रूरी है (4) **बादाम** खाने से तेज़ाबिय्यत दूर होती और अमराज़े क़ल्ब का ख़त़रा कम

होता है (5) **बादाम** बालों और जिल्द (Skin) के लिये मुफ़ीद है और रंगत भी निखारता है। (बेटा हो तो ऐसा, स. 33,34)

ज़ियादा गर दिमाग़ी है तेरा काम तो खाया कर मिला कर शहद बादाम

पिस्ते (Pistachio)

पिस्ता दिलो दिमाग़ को क़ुव्वत बख़्शता है। बदन को मोटा करता और गुर्दे (Kidneys) की कमज़ोरी को दूर करता है। ज़ेहन और हाफ़िज़ा मज़बूत करता है। खांसी के इलाज के लिये पिस्ता मुफ़ीद है।

(बेटा हो तो ऐसा, स. 36)

काजू (Cashew)

काजू जिस्म को ग़िज़ाइय्यत और दिमाग़ को ताक़त देता है। बदन को मोटा करता है। नहार मुंह शहद के साथ काजू खाना दाफ़ेए निस्यान (या'नी भूलने की बीमारी दूर करने वाला) है। एक कोढ़ी (सफ़ेद दाग़ का मरीज़) सिर्फ़ काजू ब कसरत खाने से सिह्हत याब हो गया।

(बेटा हो तो ऐसा, स. 36)

मूंगफली (Peanut)

मूंगफली के बीजों में बहुत ग़िज़ाइय्यत होती है। मूंगफली अपने फ़वाइद में काजू और अख़्रोट वग़ैरा से कम नहीं है। मूंगफली का तेल रोग़ने ज़ैतून का उम्दा बदल है। (बेटा हो तो ऐसा, स. 37)

अख़्रोट (Walnut)

अख़्रोट बद हज़्मी को दूर करता है, अख़्रोट का भुना हुवा मग़्ज़ सर्द खांसी के लिये मुफ़ीद है। अख़्रोट को चबा कर दाद पर लगाया जाए तो दाद का निशान मिट जाता है। (बेटा हो तो ऐसा, स. 39)

इन्जीर (Fig)

ह़दीसे पाक में है : ''इन्जीर खाओ ! क्यूं कि येह बवासीर (Piles) को ख़त्म करती और निक़्रिस (या'नी एक दर्द जो टख़्नों और पाउं की उंग्लियों में होता है) में मुफ़ीद है।'' (الطب النبوی لابی نعیم، ص۴۸۵، حدیث:۴۶۷ ملخصا)

(1) इन्जीर में दीगर तमाम फलों के मुक़ाबले में बेहतर ग़िज़ाइय्यत है (2) इन्जीर बवासीर को ख़त्म कर देता और जोड़ों के दर्द के लिये मुफ़ीद है (3) इन्जीर नहार मुंह खाने के अ़जीबो ग़रीब फ़वाइद हैं (4) इन्जीर मोटे पेट को छोटा करता और मोटापा दूर करता है (5) इन्जीर में खांसी और दमे का इलाज है (6) इन्जीर चेहरे का रंग निखारता है (7) इन्जीर प्यास बुझाता है। (बेटा हो तो ऐसा, स. 33 ता 43 माख़ूज़न)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुआ़ए मुस्त़फ़ा से सर्दी दूर हो गई	2	सर्दी को ख़ुश आमदीद	8
ज़माने को बुरा कहना कैसा ?	3	नेकियों भरी सोच	10
सर्दी और गर्मी कैसे होती है ?	5	रोज़ा नहीं छोड़ा	11
क़ुदरते ख़ुदावन्दी के करिश्मे	5	सख़्त सर्दी में क़मीस का सदक़ा	13
नादान इन्सान	6	नेक वज़ीर	13
मोमिनों का मौसिमे बहार	8	अपने बच्चों को येह खिलाइये	17

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اللہ

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई रीड एन्ड लिस्न इस्लामिक बुक ऐप्लीकेशन (Read & Listen Islamic Books Application) अपने मोबाइल में इन्सटोल (Install) करे और कम अज़ कम 12 को इस की दा'वत दे कर इन्सटोल करवाए और इस को इस्ति'माल करता रहे उस को इल्मे दीन के कभी ख़त्म न होने वाले ख़ज़ाने से नवाज़ कर अपने इल्म पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमा और उस को बे हिसाब बख़्श कर उस से हमेशा के लिये राज़ी हो जा।

اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

978-969-722-100-4
01013109

فیضانِ مدینہ، محلہ سوداگران، پرانی سبزی منڈی کراچی
UAN +92 21 111 25 26 92 0313-1139278
www.maktabatulmadinah.com / www.dawateislami.net
feedback@maktabatulmadinah.com / ilmia@dawateislami.net